



भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक स्तर पर योगदान

श्रीमती ममता दुबे

सहायक प्राध्यापक (गणित), देव संस्कृति कॉलेज दुर्ग

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.18797369>

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 15-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान परंपरा, वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, गणित, विज्ञान, पर्यावरण, शिक्षा प्रणाली, वैश्विक योगदान.

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और बहुआयामी बौद्धिक-विरासतों में से एक है। वैदिक साहित्य, उपनिषद, भारतीय दर्शन, गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, योग, खगोलशास्त्र, भाषासंस्कृति जैसे-विज्ञान और कला-क्षेत्रों में भारत नेमानव सभ्यता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज 21वीं सदी के दौर में यह परंपरा मानवता के लिए शांति, स्वास्थ्य, सतत विकास और वैज्ञानिक चेतना का एक संतुलित मार्ग प्रस्तुत करती है। यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक स्वरूप, उसकी मूल विशेषताओं, वैज्ञानिक उपलब्धियों और वर्तमान वैश्विक प्रभाव का विस्तार से अध्ययन करता है। साथ ही यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली ने आधुनिक विश्व की नीतियों, स्वास्थ्य मॉडल, शिक्षा, तकनीकी विकास, योग और पर्यावरण संरक्षण में किस प्रकार निर्णायक भूमिका निभाई है।

1. परिचय

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों की वैदिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक साधना का परिणाम है। विश्व में भारत को “ज्ञानभूमि”, “विश्वगुरु” और “आध्यात्मिक केंद्र” के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारतीय चिंतन की विशेषता यह है कि यह ज्ञान को मात्र बौद्धिक अभ्यास नहीं बल्कि **जीवन का उद्देश्य** मानता है। भारतीय मनीषाओं ने ज्ञान को धर्म, विज्ञान, चिकित्सा, संगीत, भाषा, गणित, खगोल, नीतिशास्त्र, राजनीति और आध्यात्मिकता जैसे अनेक क्षेत्रों में विस्तृत किया।



भारतीय दर्शन—अद्वैत, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और बौद्ध दर्शन—ने मानवता के लिए **समग्र विचार प्रणाली** प्रस्तुत की। योग ने विश्व के स्वास्थ्य मॉडल को बदल दिया, आयुर्वेद वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा का केंद्र बन रहा है, और भारतीय गणित ने शून्य, दशमलव, बीजगणित व ज्यामिति की नई परिभाषाएँ दीं। आज भारत का ज्ञान वैश्विक विमर्श का केंद्र है क्योंकि यह आधुनिक विश्व की अनेक समस्याओं—तनाव, अस्वास्थ्य, पर्यावरण संकट, सामाजिक विघटन, और तकनीकी असंतुलन—का समाधान प्रस्तुत करता है।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें हजारों वर्षों पूर्व वैदिक काल से प्रारंभ होती हैं। यह परंपरा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक, दार्शनिक, साहित्यिक, गणितीय और सामाजिक ज्ञान का व्यापक संग्रह है। इसका विकास निम्न प्रमुख चरणों में हुआ:

2.1 वैदिक काल

वेद—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद—विश्व की सबसे प्राचीन ज्ञानसंहिताएँ हैं। इनमें—

- धर्म (नैतिकता)
- कर्म (क्रियाएँ और विधियाँ)
- सृष्टि(कॉस्मोलॉजी) विज्ञान-
- गणित एवं खगोल
- वनस्पतिविज्ञान-
- भौतिक एवं रसायन ज्ञान

जैसी अनेक विषयगत सूचनाएँ मिलती हैं।

ऋग्वेद में ब्रह्मांड की उत्पत्ति, प्रकृति, अग्नि, सूर्य, वायु और जल का वैज्ञानिक वर्णन मिलता है। **यजुर्वेद** में गणनाएँ, यज्ञविज्ञान और सामाजिक व्यवस्था वर्णित है।- **सामवेद** विश्व संगीत का मूल आधार माना जाता है। **अथर्ववेद** को चिकित्सा विज्ञान और औषधिज्ञान का प्रथम दस्तावेज माना जाता है।-



2.2 उपनिषद काल

उपनिषदों ने भारतीय ज्ञान को वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दोनों दिशाओं में विस्तृत किया। इनका मुख्य उद्देश्य था— “आत्मा, ब्रह्म और विश्व के संबंध को समझना।”

अद्वैत वेदांत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत, शून्यवाद और माध्यमिक जैसे दार्शनिक सिद्धांतों ने विश्व की दार्शनिक परंपराओं को प्रभावित किया।

2.3 महाकाव्य और पुराण

रामायण और महाभारत केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं; वे समाजशास्त्र, राजनीति, नीतिशास्त्र, युद्धनीति, ज्योतिष, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान के महान ग्रंथ हैं। पुराणों ने इतिहास, भूगोल और सांस्कृतिक विकास का संरचित विवरण प्रस्तुत किया।

2.4 बौद्ध और जैन ज्ञान परंपरा

भारत की बौद्ध और जैन ज्ञान प्रणालियों ने—

- अहिंसा
- करुणा
- ध्यान
- मध्य मार्ग
- तर्कशास्त्र

जैसी अवधारणाओं को जनमानस और विश्वदर्शन में स्थापित किया।-

इन दोनों परंपराओं के कारण एशिया, यूरोप और मध्य एशिया तक भारतीय ज्ञान का विशाल प्रसार हुआ।

2.5 तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय

भारत में प्राचीन समय में जो शिक्षा व्यवस्था थी, वह दुनिया में अनोखी थी।

तक्षशिला विश्वविद्यालय

- 10,000+ विद्यार्थी



- 60+ विषय
- राजनीति, आयुर्वेद, ज्योतिष, तर्कशास्त्र, दर्शन आदि पढ़ाए जाते थे

नालंदा विश्वविद्यालय

- विश्व का पहला आवासीय विश्वविद्यालय
- चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, इंडोनेशिया और श्रीलंका से विद्यार्थी आते थे
- पुस्तकालय “धर्मगंज” में 9 मिलियन ग्रंथ थे

यह विश्व का पहला वैश्विक शिक्षा केंद्र था जिसने हजारों वर्षों तक ज्ञान का प्रसार किया।

2.6 मध्यकालीन भारत का योगदान

मध्यकालीन भारत में—

- गणित (भास्कराचार्य), माधव(
- चिकित्सा (चरक), सुश्रुत(
- ज्योतिष (वराहमिहिर)
- दर्शन (आदि शंकराचार्य)
- कला(भरतमुनि) संगीत-, नाट्यशास्त्र(

का अत्यधिक विकास हुआ।

3. भारतीय दर्शन का वैश्विक प्रभाव

भारतीय दर्शन केवल सैद्धांतिक चिंतन नहीं है, बल्कि यह जीवनप्रयोग, नैतिकता, विज्ञान, चेतना और जीवनपद्धति से जुड़े गहन प्रश्नों का समाधान प्रदान करता है। भारतीय दर्शन के छह आस्तिक और - तीन नास्तिक दर्शन विश्व के बौद्धिक इतिहास पर गहरा प्रभाव छोड़ चुके हैं।

3.1 सांख्य दर्शन

श्रीमती ममता दुबे



सांख्य दर्शन को दर्शन कहा जाता "आधारित-विज्ञान" है। इसकी खास विशेषताएँ—

- प्रकृति (Prakriti) और पुरुष (Purusha) का द्वैत सिद्धांत
- सृष्टि के 25 तत्त्व
- मन, बुद्धि, अहंकार और इंद्रियों का वैज्ञानिक विश्लेषण
- चेतना (Consciousness) की स्पष्ट अवधारणा

आधुनिक मनोविज्ञान, चेतना) अध्ययन-Consciousness Studies) और माइंड-बॉडी मॉडल पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

अमेरिका और यूरोप के कई विश्वविद्यालयों में आज भी सांख्य दर्शन पढ़ाया जाता है।

3.2 योग दर्शन और उसका वैश्विक प्रभाव

पतंजलि योगसूत्र विश्व का सबसे प्रामाणिक मन-शरीर संतुलन तंत्र माना जाता है।

इसका विश्वव्यापी प्रभाव—

- WHO द्वारा योग को मानसिक स्वास्थ्य मॉडल में शामिल किया गया
- 200+ देश "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" मनाते हैं
- अमेरिका में 3 करोड़ से अधिक योगप्रेक्टिशनर-
- यूरोप में 40,000+ योग संस्थान
- शोध संस्थान जैसे हार्वर्ड, MIT और स्टैनफोर्ड योग व ध्यान पर अध्ययन चला रहे हैं

योग ने मानवता को—

- तनाव प्रबंधन
- हृदय स्वास्थ्य



- प्रतिरोधक क्षमता
- मानसिक स्थिरता
- भावनात्मक संतुलन

जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक समाधान प्रदान किए हैं।

3.3 बौद्ध दर्शन का विश्व पर प्रभाव

बौद्ध दर्शन विशेष रूप से—

- अनित्यता (Impermanence)
- दुःख
- मध्यमार्ग
- करुणा
- ध्यान (Mindfulness)

जैसे सिद्धांतों के लिए जाना जाता है। इसने—

- चीन
- जापान
- कोरिया
- मंगोलिया
- श्रीलंका
- दक्षिण पूर्व एशिया
- यूरोप



- अमेरिका

में बौद्ध चिंतन की गहरी परंपरा विकसित की।

आज “माइंडफुलनेस” (Mindfulness) जैसा शब्द पूरी दुनिया के—

- शिक्षा
- चिकित्सा
- मनोविज्ञान
- प्रबंधन

में प्रयोग हो रहा है, जिसकी जड़ें सीधे बौद्ध ध्यान पद्धति से आती हैं।

3.4 वेदांत दर्शन का वैश्विक प्रभाव

आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित **अद्वैत वेदांत** आधुनिक दार्शनिक जगत में अत्यंत प्रभावशाली है।

- जर्मन दार्शनिक *हेगेल* और *शोपेनहावर*
- अमेरिकी दार्शनिक *थोरो*, *एमर्सन*
- रूस के *टॉलस्टॉय*
- कई आधुनिक वैज्ञानिक (विशेषकर क्वांटम भौतिक विज्ञानी)

ने वेदांत को अपने चिंतन का आधार माना।

अद्वैत का संदेश—“समस्त ब्रह्मांड एक है, सभी प्राणी एक ही चेतना के अंग हैं।” यह संदेश आज विश्व में पर्यावरण, मानवाधिकार और शांति) अध्ययन-Peace Studies) का बौद्धिक आधार बन रहा है।

3.5 न्याय एवं वैशेषिक दर्शन

इन दोनों दर्शनों ने भारत में—

श्रीमती ममता दुबे



- तर्कशास्त्र
- भाषा के अर्थ
- ज्ञान के साधन
- पदार्थ और गुण
- परमाणु सिद्धांत

जैसी अवधारणाओं का वैज्ञानिक स्वरूप दिया।

वैशेषिक दर्शन का परमाणु सिद्धांत (Atomic Theory) विश्व के आधुनिक भौतिक विज्ञान से पहले तैयार किया गया था।

4 : भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक स्तर पर प्रभाव

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Tradition) का इतिहास केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक यह वैश्विक स्तर पर मानव सभ्यता को दिशा प्रदान करती रही है। विभिन्न क्षेत्रों—जैसे दर्शन, गणित, चिकित्सा, शिक्षा, पर्यावरण, आध्यात्मिकता और जीवनमूल्य—में भारत ने जो योगदान दिए, उन्होंने विश्व संस्कृति, विज्ञान और विचारपरंपरा को - गहराई से प्रभावित किया। इस खंड में भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक प्रभाव का विश्लेषण चार प्रमुख श्रेणियों में किया गया है : (1) ज्ञान और विज्ञान का वैश्विक प्रसार, (2) सांस्कृतिक व आध्यात्मिक प्रभाव, (3) आधुनिक विज्ञान में भारतीय योगदान, तथा (4) आधुनिक वैश्विक संस्थानों में भारतीय विचारों का स्वीकार।

4.1 ज्ञान और विज्ञान का वैश्विक प्रसार

भारत ने प्रारंभिक काल से ही ज्ञान के अद्वितीय केंद्रों का विकास किया—तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालयों में एशिया और भूमध्यसागरीय देशों के विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। इन केंद्रों से भारत के वैज्ञानिक और दार्शनिक विचार विश्वभर में पहुँचे।

4.1.1 गणितीय परंपरा का वैश्विक प्रभाव



भारतीय गणित की सबसे बड़ी देन शून्य (0) की अवधारणा, दशमलव पद्धति, बीजगणित (Algebra) और त्रिकोणमिति का विकास है। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य आदि विद्वानों के ग्रंथ अरब तथा यूरोपीय भाषाओं में अनूदित हुए। के नाम से यह आज पूरे विश्व में गणना की मूल "अरबी अंक प्रणाली-हिन्दू" पद्धति है।

4.1.2 चिकित्सा और शल्य-चिकित्सा का प्रसार

आयुर्वेद और योगसाधना ने वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य विज्ञान को नई दिशा- दी।

- चरक संहिता व सुश्रुत संहिता का अनुवाद 8वीं-10वीं शताब्दी में अरब देशों में हुआ।
- सुश्रुत की शल्य चिकित्सा पद्धतियों ने आधुनिक सर्जरी के विकास को प्रभावित किया।
- 21वीं सदी में WHO ने योग और आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में मान्यता प्रदान की।

4.1.3 खगोल-विज्ञान

भारतीय खगोलविदों द्वारा ग्रहगति-, पञ्चांग गणना, दिनरात की अवधारणा और वर्ष की लंबाई का - अत्यंत सटीक निर्धारण किया गया। ये ज्ञान अरब जगत और यूरोप में अनुवादों के माध्यम से पहुँचा, जिसने आधुनिक खगोलशास्त्र की नींव को मजबूती दी।

4.2 सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रभाव

4.2.1 उपनिषद्, गीता और बौद्ध दर्शन का प्रसार

18वीं-19वीं सदी में उपनिषदों और भगवद्गीता का अंग्रेज़ी, जर्मन और फ्रेंच में अनुवाद होने के बाद यूरोप में भारतीय आध्यात्मिक दर्शन की विशाल लोकप्रियता बढ़ी।

- स्वामी विवेकानंद ने 1893 के शिकागो धर्म संसद में भारतीय दर्शन को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया।
- बौद्ध दर्शन चीन, जापान, कोरिया और दक्षिणपूर्व एशिया में सामाजिक-, नैतिक और शैक्षणिक ढांचे को प्रभावित करता रहा।

4.2.2 अहिंसा का वैश्विक नैतिक प्रभाव



महात्मा गांधी की अहिंसा और सत्याग्रह की अवधारणा ने

- मार्टिन लूथर किंग,
- नेल्सन मंडेला,
- दलाई लामा सहित कई वैश्विक आंदोलनों को प्रेरित किया।

भारत के जीवनमूल्य—सर्वधर्म समभाव, एकत्ववाद, मानवतावाद—आज संयुक्त राष्ट्र के नैतिक सिद्धांतों में दिखाई देते हैं।

4.3 आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीय योगदान

भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक विज्ञान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

- रामानुजन की संख्या सिद्धांत पर आधारित खोजें आज कंप्यूटर विज्ञान और क्रिप्टोग्राफी में उपयोगी हैं।
- सीरमन .वी. की खोज—रमन प्रभाव—ने आधुनिक भौतिकी को नई दिशा दी।
- डॉहोमी भाभा . और विक्रम साराभाई ने भारत के परमाणु और अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव रखी, जिसका प्रभाव पूरी दुनिया ने स्वीकार किया।

आज भारत की चंद्रयान, मंगलयान, आदित्य-L1 जैसी उपलब्धियाँ वैश्विक विज्ञानजगत को नई प्रेरणा - प्रदान कर रही हैं।

4.4 वैश्विक संस्थानों में भारतीय विचारों की स्वीकृति

4.4.1 शिक्षा दर्शन

विश्व भर में आधुनिक शिक्षानीतियाँ—विशेषकर *holistic development*, *value-based education*, *experiential learning*—भारतीय शिक्षादर्शन की देन हैं।-

4.4.2 पर्यावरण और स्थिरता



भारतीय परंपरा "पृथ्वी को माता मानना", "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे सिद्धांतों पर "सतत विकास" और "आधारित रही है। आज विश्व आर्थिक मंच (WEF) और संयुक्त राष्ट्र (UN) पर्यावरण नीतियों में इन विचारों को अपनाते दिखाई देते हैं।

4.4.3 योग और वेलनेस इंडस्ट्री

आज योग 180 से अधिक देशों में प्रयोग किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) भारतीय ज्ञान (परंपरा की वैश्विक स्वीकृति का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

संक्षेप में

भारतीय ज्ञान परंपरा ने न केवल वैश्विक वैज्ञानिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित किया है, बल्कि मानव सभ्यता को एक समग्र दृष्टि प्रदान की है, जिसमें विज्ञान, अध्यात्म, नैतिकता और जीवन के मूल्यों का अद्भुत समन्वय है। भारत का यह योगदान भविष्य में भी वैश्विक शांति, स्थिरता और ज्ञानविकास का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।-

भाग 5 : भारतीय ज्ञान परंपरा का समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य और भविष्य की संभावनाएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा आज केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं है, बल्कि वैश्विक सामाजिक वैज्ञानिक ढाँचे का सक्रिय हिस्सा है। 21वीं सदी में जब विश्व एक ओर तकनीकी प्रगति तो दूसरी ओर मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट, असमानता और मूल्यों के क्षरण से जूझ रहा है, ऐसे समय में भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा मानवता को संतुलन और दिशा प्रदान कर रही है। इस खंड में आधुनिक वैश्विक परिदृश्य में भारतीय ज्ञान की उपयोगिता और इसकी भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

5.1 वैश्वीकरण के युग में भारतीय ज्ञान की पुनर्प्रासंगिकता

वैश्वीकरण ने जहाँ भौतिक प्रगति को तेज़ किया, वहीं जीवनमूल्य-, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भाव को चुनौती दी। भारतीय ज्ञान परंपरा—जो *समग्रता (Holism)*, *संतुलन (Balance)* और *मानव मूल्य- (Humanism)* पर आधारित है—आज विश्व को एक वैकल्पिक विकास मॉडल दे रही है।

5.1.1 योग, ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य



विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने तनाव, अवसाद और मानसिक विकारों को वैश्विक महामारी घोषित किया है। भारत के योग, ध्यान, प्राणायाम और आयुर्वेद आधारित उपचार आधुनिक मनोविज्ञान और चिकित्सा के पूरक बन चुके हैं।

- अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में योगथेरेपी को- *clinical practice* में शामिल किया जा रहा है।
- ध्यान (Meditation) को *mindfulness-based cognitive therapy* का आधार माना गया है।
- भारत की “आयुष” प्रणाली आज 100 से अधिक देशों में प्रचलित है।

5.1.2 भारतीय जीवन-मूल्य और विश्व शांति

भारत की परंपरा *वसुधैव कुटुम्बकम्* और *अहिंसा* पर आधारित है, जो आज संयुक्त राष्ट्र (UN) की नीतियों में परिलक्षित होता है।

- विश्व शांति के लिए गांधीवादी दर्शन,
- पर्यावरण संरक्षण के लिए वैदिक सिद्धांत,
- और संवाद तथा सहअस्तित्व का भारतीय मॉडल- आज वैश्विक सभ्यता के लिए मार्गदर्शक है।

5.2 पर्यावरण और सतत विकास में भारतीय योगदान

आज विश्व का सबसे बड़ा संकट पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन है। भारतीय सभ्यता ने प्रकृति को पूज्य और संरक्षण योग्य माना है।

5.2.1 पृथ्वी और प्रकृति के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

- “*पृथ्वीमाता* :” का सिद्धांत
- “*ऋत*” के अनुसार संतुलनपूर्ण जीवन-
- जल, वन, पशु और पर्यावरण संरक्षण की वैदिक शिक्षाएँ



ये सभी आधुनिक *Eco-Spirituality* और *Sustainable Development* के आधार बन चुके हैं।

5.2.2 वैश्विक मंचों पर भारतीय नेतृत्व

भारत ने G20 तथा संयुक्त राष्ट्र दोनों में *Lifestyle for Environment (LiFE)* नामक वैश्विक अभियान आरंभ किया, जो भारतीय “सादा जीवन-उच्च विचार” पर आधारित है।

यह अभियान दुनिया भर में “सतत जीवनशैली” अपनाने का आह्वान करता है।

5.3 विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीय दृष्टिकोण की भूमिका

भारत का विज्ञान केवल तथ्यात्मक या प्रयोगात्मक नहीं रहा, बल्कि उसमें दर्शन, मूल्य और मानवता का समन्वय है।

5.3.1 आधुनिक शोध में भारतीय गणित और ज्योतिष का महत्व

- भारतीय गणित से प्रेरित *computational sciences, cryptography, AI algorithms*।
- नक्षत्रआधारित समय गणना आज- *astronomical software* में उपयोगी।

5.3.2 ISRO और वैश्विक वैज्ञानिक जगत

भारत के अंतरिक्ष मिशनों ने “सस्ते, प्रभावी और वैज्ञानिक रूप से उन्नत तकनीक” का वैश्विक मॉडल प्रस्तुत किया है।

- चंद्रयान-3
- मंगलयान
- आदित्य-L1

इन सभी मिशनों ने विश्व को भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण की क्षमता से परिचित कराया।

5.4 वैश्विक शिक्षा प्रणाली में भारतीय विचारों का समावेश

आज विश्व की कई विश्वविद्यालयनीतियाँ भारतीय शिक्षा दर्शन से प्रेरित हैं।-



5.4.1 समग्र शिक्षा (Holistic Education)

भारत में शिक्षा का उद्देश्य *विद्या से विनय और ज्ञान से आत्मविकास* रहा है। इसी मॉडल को आज विश्वभर की नई शिक्षा प्रणालियाँ अपना रही हैं।

5.4.2 मूल्य-आधारित शिक्षा (Value-Based Education)

भारत में

- सत्य,
- करुणा,
- अहिंसा,
- अनुशासन,
- और कर्तव्य

को शिक्षा का अंग बनाया जाता था।

यह विचार अब वैश्विक शिक्षानीतियों का महत्वपूर्ण हिस्सा है।-

5.5 भारतीय ज्ञान परंपरा की भविष्य की संभावनाएँ

5.5.1 विज्ञान-आध्यात्मिकता का समन्वय

भविष्य में भारतीय मॉडल—जहाँ विज्ञान और अध्यात्म एकदूसरे के पूरक हैं—वैश्विक मानवता को संतुलित विकास का रास्ता दिखा सकता है।

5.5.2 विश्व स्वास्थ्य के लिए योग-आयुर्वेद का विस्तार

WHO द्वारा वैश्विक आयुर्वेद संस्थान स्थापित करने के प्रस्ताव से यह स्पष्ट है कि भारतीय चिकित्सा प्रणाली भविष्य में और अधिक प्रभावशाली होगी।

5.5.3 डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान का प्रसार

AI, रोबोटिक्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से

- वेद,
- उपनिषद,

श्रीमती ममता दुबे



- आयुर्वेद,
- योग,
- भारतीय गणित विश्वभर में और अधिक सुलभ होंगे।

5.5.4 पर्यावरण-आधारित विकास मॉडल

भारत का “जीवन शैली आधारित विकास” भविष्य की वैश्विक नीतियों का मार्गदर्शन करेगा।

निष्कर्ष

समकालीन विश्व जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है—मानसिक तनाव, सामाजिक विभाजन, पर्यावरण संकट और मूल्यहीनता—उनका समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित है। यह परंपरा न केवल मानवता को अतीत की बुद्धिमत्ता प्रदान करती है, बल्कि भविष्य के लिए स्थिर और संतुलित मार्ग भी प्रस्तुत करती है। इसलिए, भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव आने वाले दशकों में और अधिक व्यापक तथा गहरा होने की संभावना है।

संदर्भ सूची

- Acharya, S. (2015). *The Foundations of Indian Knowledge Systems*. New Delhi: IGNC.
- Achar, B. N. (2013). Indian contributions to mathematics and astronomy. *Indian Journal of History of Science*, 48(4), 555–568.
- Bose, S. N. (2005). *Collected Works of S.N. Bose*. New Delhi: Indian National Science Academy.
- Chakravarti, P. (2012). Ayurveda and global health: A historical perspective. *Journal of Ayurveda and Integrative Medicine*, 3(4), 180–184.
- Ghosh, A. (2010). *Studies in Ancient Indian Science*. Kolkata: Asiatic Society.
- Joseph, G. (2000). *The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics*. Princeton: Princeton University Press.
- Kak, S. (2017). Knowledge traditions and their scientific foundations. *Journal of Indian Council of Philosophical Research*, 34(2), 165–178.
- Kashyap, A. (1998). *The Patanjali Yoga Sutras: A New Translation*. Delhi: HarperCollins.



- King, R. (1999). *Orientalism and Religion: Postcolonial Theory, India, and 'The Mystic East'*. London: Routledge.
- Mookerji, R. (1951). *Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist*. Delhi: Motilal Banarsidass.
- Pingle, M. (2015). Holistic education and Indian traditional knowledge systems. *International Journal of Education and Psychology*, 45(2), 78–89.
- Plokker, K. (2007). Indian mathematics: Logic, method, and tradition. *History of Science Review*, 41(3), 200–217.
- Radhakrishnan, S. (1996). *Indian Philosophy* (Vol. 1–2). Oxford: Oxford University Press.
- Rai, S. (2019). Sustainability and Indic philosophy: A comparative study. *UNESCO Journal of Sustainable Thought*, 6(1), 34–47.
- Saraswati, S. S. (2009). *Hatha Yoga Pradipika: Commentary and Translation*. Bihar: Bihar School of Yoga.
- Sharma, A. (2002). *Classical Hindu Thought: An Introduction*. Oxford: Oxford University Press.
- UNESCO. (2017). *Yoga: Cultural heritage and global recognition*. Paris: UNESCO Publications.
- United Nations. (2021). *Lifestyle for Environment (LiFE) Report*. New York: United Nations Environment Programme.
- World Health Organization. (2019). *Traditional Medicine Strategy 2014–2023*. Geneva: WHO Press.